ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292 PP. NO.- 315-316
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

इंटरनेट पर हिंदी का बढ़ता आधिपत्य

विनोद कुमार

असि0 प्रोफेसर (नेट)– समाजशास्त्र विभाग, मेजर रामदयाल सिंह महाविद्यालय, फरूखाबाद, (उ0प्र0), भारत

Received- 19.07.2020, Revised- 23.07.2020, Accepted - 25.07.2020 E-mail: dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : *एक दशक पहले तक यही माना जाता था कि इंटरनेट पर हिंदी के लिए कोई गुंजाइश नहीं है और अगर आप अंग्रेजी से दोस्ताना नहीं रखते, तो इंटरनेट आपके लिए दूर की कौड़ी ही साबित होगा। लेकिन आज कोई इस बात पर यकीन नहीं करेगा। इसकी वजह यह है कि वर्तमान दौर में इंटरनेट पर भी हिंदी का आधिपत्य बढ़ता जा रहा है। आज सैकड़ों ऐसे लोगों के लिए भी इंटरनेट अत्यंत उपयोगी साधन बन गया है, जो अंग्रेजी नहीं जानते और अपने कंप्यूटर पर भी हिंदी का इस्तेमाल करना चाहते हैं। आज ऐसे तमाम लोग हिंदी में ई–मेल कर रहे हैं, हिंदी में सूचनाओं का आदान–प्रदान कर रहे हैं, हिंदी में ब्लॉग लिख रहे हैं और हिंदी में वेब पत्रिकाएं प्रकाशित कर रहे हैं। और यह सब संभव हुआ हिंदी में यूनीकोड फॉण्ट के आने के बाद। कैलिफोर्निया में पंजीकृत संगठन 'यूनीकोड कन्सॉर्शियम' ने इस एनकोडिंग प्रणाली का विकास किया और इसके प्रचलन में आने के बाद भारतीय भाषाओं को इंटरनेट के संसार में एक नया आसमान मिल गया।*

कुंजीभूत शब्द– इंटरनेट, साबित, यकीन, वर्तमान दौर, आधिपत्य, अत्यंत, उपयोगी, साधन, कंप्यूटर।

यूनीकोड कन्सॉर्शियम लाभ न कमाने वाला एक संगठन है, जिसकी स्थापना यूनीकोड स्टैंडर्ड के विकास, विस्तार और इसके प्रयोग का बढ़ावा देने के लिए की गई थी।[1] इस कन्सॉर्शियम के सदस्यों में कंप्यूटर और सूचना उद्योग के विभिन्न निगम और संगठन शामिल हैं। यूनीकोड कन्सॉर्शियम की सदस्यता दुनिया में कहीं भी स्थित उन संगठनों और लोगों के लिए खुली है, जो युनीकोड का समर्थन करते हैं और जो इसके विस्तार और कार्यान्वयन में सहायता करना चाहते हैं। माइक्रोसॉट जैसी कंपनी भी 'यूनीकोड कन्सॉर्शियम' में शामिल है और जाहिर है कि यूनीकोड प्रणाली को उसका भी समर्थन हासिल था। वर्ष 2001 में माइक्रोसॉट ने हिंदी यूनीकोड फॉण्ट मंगल को अपने ऑपरेटिंग सिस्टम में शामिल कर लिया। इसके बाद जब–जब माइक्रोसॉट ने अपने ऑपरेटिंग सिस्टम का अपडेट वर्शन बाजार में जारी किया, उसने हिंदी यूनीकोड फॉण्ट भी उपलब्ध करवाया। हमारे देश में चूंकि कंप्यूटर पर काम करने वाले ज्यादातर लोग माइक्रोसॉट के ऑपरेटिंग सिस्टम के जरिए ही काम करते हैं, इसलिए उनके पास भी यूनीकोड फॉण्ट स्वतः ही पहुंच गया।

यूनीकोड क्या है?– यूनीकोड प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नंबर प्रदान करता है। कंप्यूटर, मूल रूप से, नंबरों से संबंध रखते हैं। ये प्रत्येक अक्षर और वर्ण के लिए एक नंबर निर्धारित करके अक्षर और वर्ण संगृहीत करते हैं। यूनीकोड का आविष्कार होने से पहले, ऐसे नंबर देने के लिए सैकड़ों विभिन्न संकेत लिपि प्रणालियाँ थीं। किसी एक संकेत लिपि में पर्याप्त अक्षर नहीं हो सकते हैं। उदाहरण के लिए यूरोपीय संघ को अकेले ही अपनी सभी भाषाओं को कवर करने के लिए आवश्यकता होती हैं। अंग्रेजी जैसी भाषा के लिए भी, सभी अक्षरों, विरामचिन्हों और सामान्य प्रयोग के तकनीकी प्रतीकों के लिए एक ही संकेत लिपि पर्याप्त नहीं थी। ये संकेत लिपि प्रणालियाँ परस्पर विरोधी भी हैं। इसीलिए दो संकेत लिपियाँ दो विभिन्न अक्षरों के लिए एक ही नंबर प्रयोग कर सकती हैं, अथवा समान अक्षर के लिए विभिन्न नंबरों का प्रयोग कर सकती हैं। किसी भी कंप्यूटर (विशेष रूप से सर्वर) को विभिन्न संकेत लिपियाँ संभालनी पड़ती है, फिर भी जब दो विभिन्न संकेत लिपियों अथवा प्लेटफॉर्म (कंप्यूटर) के बीच डाटा भेजा जाता है, तो उस डाटा को हमेशा खराब होने का जोखिम रहता है।

यूनीकोड से यह सब कुछ बदला रहा है! यूनीकोड, प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नंबर प्रदान करता है, चाहे कोई भी प्लेटफॉर्म हो, चाहे कोई भी कंप्यूटर प्रोग्राम हो, चाहे कोई भी भाषा हो। यूनीकोड स्टैंडर्ड को एपल, एचपी, आईबीएम, जस्ट सिस्टम, माईक्रोसॉट, ऑरक्ल, सैप, सन, साईबेस, यूनिसिस जैसी उद्योग की प्रमुख कंपनियों और कई अन्य ने अपनाया है। यूनीकोड स्टैंडर्ड की उत्पत्ति और इसके सहायक उपकरणों की उपलब्धता, हाल के दौर के अति महत्त्वपूर्ण विश्वव्यापी सॉटवेयर टैक्नोलॉजी रूझानों में से एक है।

यूनीकोड को ग्राहक–सर्वर अथवा बहु–आयामी

[1] अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

उपकरणों और वेबसाइटों में शामिल करने से परंपरागत उपकरणों के प्रयोग की अपेक्षा खर्च में अत्यधिक बचत होती है। यूनीकोड से एक ऐसा अकेला सॉटवेयर उत्पाद अथवा अकेली वेबसाइट मिल जाती है, जिसे री–इंजीनियरिंग के बिना विभिन्न प्लेटफॉर्मों, भाषाओं और देशों में उपयोग किया जा सकता है। इससे डाटा को बिना किसी बाधा के विभिन्न प्रणालियों से होकर ले जाया जा सकता है।

अगर कोई लेख किसी जगह पर किसी ऐसे फॉन्ट को प्रयोग करके लिखा गया है, जो कि यूनीकोड नहीं है तो TBIL (टिबिल) नाम से टूल का प्रयोग कर उसे यूनीकोड में बदला जा सकता।

यूनीकोड के प्रयोग से सबसे बड़ा लाभ यह हुआ है कि एक कंप्यूटर पर दर्ज किया गया पाठ (टेक्स्ट) विश्व के किसी भी अन्य यूनीकोड आधारित कंप्यूटर पर खोला जा सकता है। इसके लिए अलग से उस भाषा के फॉण्ट का इस्तेमाल करने की अनिवार्यता नहीं है, क्योंकि यूनीकोड केंद्रित हर फॉण्ट में सिद्धांततः विश्व की हर भाषा के अक्षर मौजूद हैं। कंप्यूटर में पहले से मौजूद इस क्षमता को सिर्फ एक्टिवेट (सक्रिय) करने की जरूरत है, जो विंडोज एक्सपी, विंडोज 2000, विंडोज 2003, विंडोज विस्ता, मैक एक्स 10, रेड हैट लिनक्स, उबन्तु लिनक्स आदि ऑपरेटिंग सिस्टम्स के जरिए की जाती है। विश्व भाषाओं की यह उपलब्धता सिर्फ देखने या पढ़ने तक ही सीमित नहीं है। हिंदी जानने वाला कोई शख्स यूनीकोड आधारित किसी भी कंप्यूटर में टाइप कर सकता है, भले ही विश्व के किसी भी कोने में न हो। सिर्फ हिंदी ही क्यों एक ही फाइल में, एक ही फॉण्ट का इस्तमाल करते हुए आप विश्व की किसी भी भाषा में लिख सकते हैं। इस प्रक्रिया में अंग्रेजी कहीं भी आड़े नहीं आती। विश्वभर में चल रही भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी का यह अपना अलग ढंग का योगदान है।

यूनीकोड आधारित कंप्यूटरों में हर काम किसी भी भारतीय भाषा में किया जा सकता है, बशर्ते ऑपरेटिंग सिस्टम या कंप्यूटर पर इंस्टॉल किए गए सॉटवेयर यूनीकोड व्यवस्था का पालन करें। मिसाल के तौर पर माइक्रोसॉट के ऑफिस संस्करण, सन माइक्रोसिस्टम्स के स्टार ऑफिस या फिर ओपनसोर्स पर आधारित ओपनऑफिस. ऑर्ग जैसे सॉटवेयरों में आप शब्द संसाधक (वर्ड प्रोसेसर), तालिका आधारित सॉटवेयरों (स्प्रैडशीट), प्रस्तुति संबंधी सॉटवेयर (पावर–प्वाइंट आदि) तक में हिंदी और अन्य भाषाओं का बिलकुल उसी तरह प्रयोग कर सकते हैं, जैसे कि अब तक अंग्रेजी में किया करते थे। यानी न सिर्फ टाइपिंग, बल्कि शॉटिंग, इन्डेक्सिंग, सर्च मेल मर्ज, हेडर–फुटर, फुटनोट्स, टिप्पणियाँ (कमेंट) आदि सब कुछ। कंप्यूटर पर फाइलों के नाम लिखने के लिए भी अब अंग्रेजी की जरूरत नहीं रह गई है। इंटरनेट पर भी अब यूनीकोड का मानक खूब लोकप्रिय हो रहा है और धीरे–धीरे लोग पुरानी एनकोडिंग व्यवस्था की सीमाओं से निकल कर यूनीकोड अपनाने की दिशा में बढ़ रहे हैं। गूगल, विकीपीडिया, एमएसएन आदि इसके उदाहरण हैं, जिनमें हिंदी में काम करना उसी तरह संभव है जैसे कि अंग्रेजी में।

नई चुनौतियाँ– इसी संदर्भ में एक अहम सवाल यह उठता है कि इंटरनेट पर हिंदी को लोकप्रिय बनाने के रास्ते में और क्या चुनौतियाँ हैं। दरअसल इस राह में सबसे बड़ी चुनौती इंटरनेट की पहँच और कंप्यूटरों की कीमत से जुड़ी है। शोध कंपनी जक्सकंसल्ट' द्वारा जून 2008 में किए गए एक सर्वे के मुताबिक भारत में चार करोड़ 90 लाख लोग इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहे थे, जिनमें से लगभग 90 लाख लोग इंटरनेट का नियमित तौर पर इस्तेमाल करने वाले हैं। 'जक्संकसल्ट' के संस्थापकों में से एक मृत्युंजय मिश्रा कहते हैं,..... भारतीय भाषाओं के लिए इंटरनेट पर बड़ी संभावनाएं मौजूद हैं। हमारे अध्ययन में हमने पाया कि इंटरनेट का उपयोग करने वाले 28 फीसदी हिंदुस्तानी इंटरनेट पर अंग्रेजी की सामग्री देखना पसंद करते हैं।(2) लेकिन भारतीय भाषाओं में अच्छी गुणवत्ता की सामग्री न मिलने के कारण वे भारतीय भाषाओं की वेबसाइट पर नहीं गए। लेकिन उत्साहजनक संकेत यह हैं कि हजारों हिंदी प्रेमी, अध्यापक, पत्रकार, डॉक्टर, इंजीनियर आदि इंटरनेट पर आ रहे हैं और अपनी वेबसाइट या ब्लॉग के जरिए अपना योगदान कर रहे हैं। ये लोग किसी कारोबारी मॉडल का इंतजार नहीं कर रहे हैं। जिला स्तर के हिंदी अखबार भी अब इंटरनेट पर नजर आने लगे हैं। बदलाव की यह बयार सुखद है।[3]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्याम माथुर : वेब पत्रकारिता, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ संख्याः– 36, 2010
2. शोध कंपनी जक्सकंसल्ट, उद्धत, श्याम माथुर, वेब पत्रकारिता, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010
3. शोध कंपनी जक्सकंसल्ट, उद्धत, श्याम माथुर, वेब पत्रकारिता, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010

*****